DIP SYNAPSE

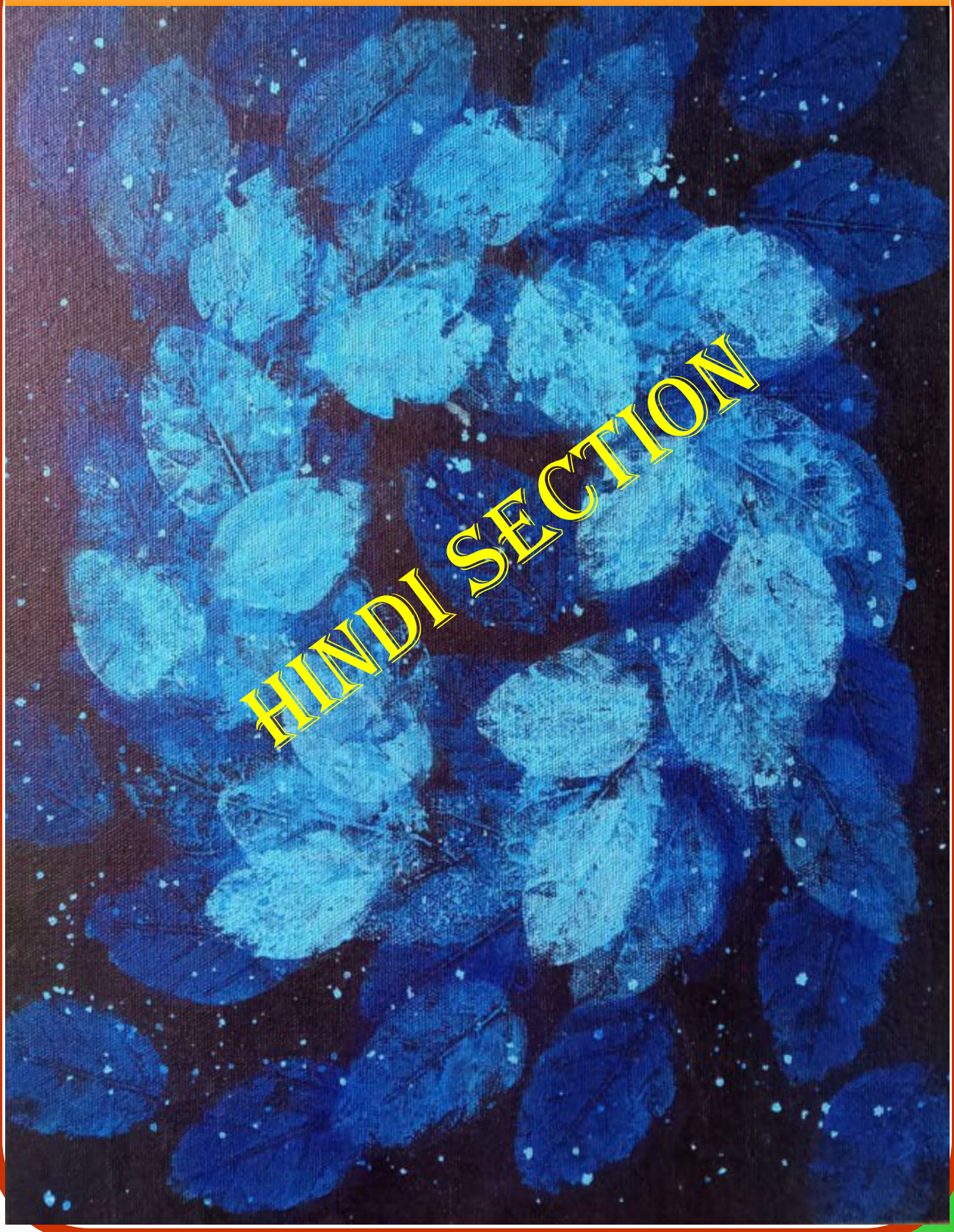

जीवन के रंग कविता के संग

माँ का प्यार

माँ वह होती है, जो हमको धरती पर लाती है।
खुद -तो दर्द सहती है पर हमको खुशियाँ देती है।

माँ तो वह होती है, जो खुद भूखी रहती है,
पर अपने बच्चों को पेट भर देती है ।

हम बच्चें उनका कर्ज ना चुका पाएँगे,
चाहे कुछ कर ले हम उनकी बराबरी ना कर पाएँगे।

माँ ही है ईश्वर का रूप, जिससे है सारा संसार का स्वरूप ।
माँ वह होती है जो हमको धरती पर लाती हैं ।
खुद तो दर्द सहती है पर हमको खुशियाँ देती हैं।

अंतरिक्ष शर्मा
कक्षा -आठवीं

सुंदर आसाम

कितना सुंदर है आसाम,
मनभावन इसकी हर एक शाम।
काजीरंगा बढ़ाएं इसकी शान,
ब्रह्मपुत्र नदी बड़ी महान ।
कितना सुंदर है आसाम।।

गोद में इसके चाय बागान,
हरियाली से घिरा आसाम।
शिवडोल मंदिर है शिव का धाम,
आहोम राजा है बड़े वीरवान।
कितना सुंदर है आसाम।।

आराध्या राय
कक्षा -पाँचवीं

लिखनी है एक कविता

दीदी ने लिखी कविता ,
उसे देखकर मुझे भी सूझा.... क्यों ना लिखूँ
मैं भी एक कविता।
जो खूबसूरत हो और हो ज्ञान से परिपूर्ण,
जो सबको लगे लुभावनी।
हाय! मुझे कुछ ना सूझ रहा ,
पर लिखनी है मुझे भी एक कविता।

लिख- लिख कलम की स्याही खत्म हो गई ,
लिख-लिख पन्ने बर्बाद हुए कई,
पर मुझे ना आया समझ ,
कैसे लिखूँ एक कविता।
माँ का लिया सुझाव ,पिता से भी कर लिया मशवरा।
हाय! मुझे कुछ ना सूझ रहा ,
पर लिखनी है मुझे एक कविता।

तय तो मैंने कर लिया है,
ठान लिया है, पक्का मन भी बना लिया है ।
न थमूँगी, न रुकूँगी ,
लिखकर रहूँगी आज मैं एक कविता।

अन्वी पोड्डर
कक्षा-नौवीं

सृजनात्मक लेखन ही है भावनाओं का अनोखा संचयन

जिन्दगी एक सफ़र

जिंदगी एक सफर जो है सुहाना
जिसको हमने न चाहा है कभी पाना ।
जिंदगी के अरचनों से गुजरते हुए
हम निकले हैं एक ऐसे मोड़ पर,
जिसको हमने न कभी हैं देखा या सुना किसी भी और से।

जिंदगी में जितने भी उतार चढ़ाव आपको रोक दे,
उड़ा दो उनको एक हवा के झोंके से ।
जिंदगी कमजोर दिलवालों का नहीं है मेरे यार ,
हमको जीने के लिए चाहिए जज्बा और विचार ।
जिंदगी कमजोर दिल वालों का नहीं है मेरे यार।।

यह मत सोचो कि क्यों यह जिंदगी मेरी ,
यह सोचो कि क्यों वह जिंदगी नहीं तुम्हारी ।
जिंदगी अनेक है एक के जाने का मत दुख मनाओ ,
अभी से बाकी के आनेवाली जिंदगी का सुख मनाओ,
और जिंदगी को हर्ष उल्लास के साथ कटाओ।
जिंदगी एक सफर जो है सुहाना
जिसको हमने न चाहा है कभी पाना।

आयान अहमद देवान
कक्षा -आठवीं

होली

फागुन आया मस्ती लाया,
रंगों से भरी सौगात लाया ।
होली का त्योहार है आया,
रंगों से भरे गुब्बारे लाया ।

दोस्तों को गुलाल से रंगने आया,
फागुन आया मस्ती लाया।
हर तरफ रंग और नाच की टोली लाया,
बुराई को हराकर जीत की पहचान लाया।
लाल, गुलाबी, पीली, हरा गुलाल आया,
हर दुश्मनी को भूल कर
दोस्ती करने का त्यौहार आया।

यशवी हरललका
कक्षा -पाँचवीं

मेरा बचपन

बचपन था सरल काश फिर बचपन में जा पाती,
ममता की छाया में रहकर मैं फिर वह पल जी पाती।

दिन भर इधर-उधर मैं खेल खिलौने फैलाती,
आँचल पकड़–पकड़ मैं माँ के पीछे-पीछे जाती ।

माँ के कोमल हाथों के सहारे मैं चलना सीखती ,
और माँ के उन्हीं कोमल हाथों से मैं खाना खाती।

खेलते हुए मैं रोती और माँ की गोदी में चढ़ जाती,
हर पल माँ के साथ के लिए मैं बहाना बनाती।
माँ के साथ दिन- भर खेल और पीठ पर सैर-सपाटा ,
थकी हुई मैं रात को माँ की गोदी में सो जाती है।

वैष्णवी राठौड़
कक्षा -छठवीं

विचारों और भावनाओं का संगम है इस लेख माला की धड़कन

पर्यावरण

अच्छी चीजों का ढेर है,
पर्यावरण में सुंदर फूल,पेड़ है।
जहाँ अच्छा पर्यावरण,वहाँ स्वस्थ मन
पर्यावरण हमें जीवित रखता है,
यह हमें स्वस्थ्य बनाता है।

पेड़ों ने कहा -
"सुनो-सुनो प्यारे, हमें मत काटो,
हम हैं तुम्हारे रखवाले।"
थोड़ा- सा इससे दिल तो लगाओ
इसकी शोभा को थोड़ा- सा और बढ़ाओ।
नाम इसका वातावरण,
पर प्यार से हम कहते हैं पर्यावरण

ऋषिकेश नाथ
कक्षा-पाँचवीं

मेरी माँ

मेरी माँ जैसी कोई नहीं,
उसके जैसा प्यार कोई करता नहीं।
ममता से बढ़कर कुछ नहीं,
माँ जैसा दोस्त कोई होता नहीं।

दिनभर करती काम ,
कभी थकती नहीं।
वह अपने परिवार की सहायता करती ,
जीवन में हर वक्त संघर्ष करती।
मेरी माँ जैसी कोई नहीं,
उसके जैसा प्यार कोई करता नहीं।

अन्मेषा दास
कक्षा-पाँचवीं

बचपन

प्यार से हम पले बड़े हुए,
मस्ती से भरपूर।
माँ जब खाना खिलाती,
तो भाग जाते दूर।
जब भी पापा डाँटते,
तो दादी को पुकारते ।
वोह भी क्या बचपन था ,
मस्ती से भरपूर।

दादा जी का चश्मा लगाकर
दादी माँ की चुन्नी लेकर
इन सबकी नकल उतारकर
भाग जाते हम कोसों दूर।

वह छुट्टी का इंतजार करना,
नाना-नानी के घर जाना।
मामा जी को बड़ा सताना ,
मामी जी से पकवान बनाना,
वह भी क्या बचपन था,
मस्ती से भरपूर।

विनती गोयल
कक्षा -ँचवीं

कल्पना और यथार्थ का शुद्ध मिश्रण है,आपकी लेखनी आपके शब्द।

जीवन

जीवन में होता है दुख और दर्द,
पर जीवन में जीने का मौका मिलता है ।
जीवन होता है जैसे एक फूल
कभी खिले तो कभी मुरझाए ।

जहाँ राह वहीं पर जाए,
कभी मिले खुशी तो कभी मिले गम।
पर जीवन जैसा हो,
जीने को मिलता है बहुत कम ।

जीवन होता है बहुत अनमोल,
कभी व्यर्थ न जाने दे ,
चाहे जैसा भी हो।

हमेशा सोचिए आपको मिला है
एक जीवन मनुष्य का
तो कभी न हो दुखी
हमेशा हँसे और जिए खुशहाल जिंदगी।

ऋषभ राय बरा
कक्षा-पाँचवीं

सपने

हाँ, आपने ठीक समझा
वही जो हमें दिन-रात दिखते हैं
कुछ भयानक कुछ हँसाने- गुदगुदाने वाले
कुछ अजीब और कुछ रुलाने वाले !

पता नहीं कैसा है रिश्ता
इन सपनों से हमारा- तुम्हारा
रात में देखने वालों से अच्छे
वो सपने जो सोने न दे।

मेरे भी कुछ सपने हैं
आकाश को छूने वाले
पृथ्वी को अपने में समाने वाले
उड़ान कुछ ऐसे भरू
देश का नाम रोशन कर सकूं।

नंदिनी शर्मा
कक्षा-छठवीं

जीवन का अर्थ

जीवन सभी कुछ त्याग देने का नाम है।
या, सब कुछ बटोर लेने का ।
अगर बटोरना ही है तो
क्यों ना जिंदगी का
सबसे खूबसूरत
केवल एक क्षण ही बटोरे
उसे स्मृति की टोकरी में सजा लें।

उस क्षण दोनों हाथ
अँगारों से जलते नहीं है
बल्कि फूलों से भर उठते हैं।
अगर ऐसा नहीं होता,
तो कलम थम जाती है,
कागज कोरा रह जाता,
और एक नाम मर जाता ,
अपनी मौत से पहले।

स्वास्तिका रायशर्मा
कक्षा-नौवीं

सूखे पत्ते में भी जो प्राण डाल दे वह है शब्द रूपी प्राणवायु।

वसंत ऋतु की यादें

तुम मुझे भुला नहीं पाओगे ,
वसंत ऋतु में तुम जरुर आओगे।
आँखों में प्यार और उम्मीद लिए,
प्रकृति की अनुपम उपहार पाओगे।

हरे यह पेड़ सुहानी यह धूप,
रंगीन यह फूल और कलियाँ ।
सुगंध जो मिल जाए हवाओं में,
घोले खुशियां अपार हमारे मन में।

तुम ऋतुराज में खुशी के साथ खेल पाओगे,
वसंत ऋतु के साथ तुम चले जाओगे।
फिर कभी तो तुम जरूर आओगे,
क्योंकि तुम मुझे भुला नहीं पाओगे।

आद्रित भट्टाचार्य
कक्षा-सातवीं

माता पिता का प्यार

यह किसका मेरे दिल पर पहरा है.....?
यह कौन है जिसका प्यार इतना गहरा है ?
वह कौन है?
जो जाहिर किए बिना ही ,
मेरी इतनी फिक्र करता है।
वह कौन है?
जो मेरी हर खुशी के लिए मरता है ।

मैं खुश रहूँ इस बात का पूरा ध्यान रखता है ।
मेरी हर जरूरत को पूरा करता है।
परंतु अपनी जरूरतों को व्यक्त नहीं करता,
वह कोई और नहीं माता-पिता ही होते हैं।
एक माता- पिता का प्यार ही,
सबसे गहरा होता है।
जो हर उतार-चढ़ाव में साथ देता है।

पीहू खंडेलिया
कक्षा-पाँचवीं

मेरी आदर्श मेरी माँ

जो है मेरी जिंदगी
जो है मेरी जन्नत
जिसने मुझे जीवन दिया
जिसने मुझे जिंदगी दी
वह है मेरी मां ।

जिसने मुझे आशियाना दिया
वह है मेरी माँ।
माँ की गोद में मुझे जो सुकून मिला
वह मुझे पूरे दुनिया में न मिला।

भगवान का यह तोहफा
मेरे दिल में बस गया
वह है मेरी माँ
जिस बिन फीकी मेरी जिंदगी की हर खुशी

सुभी झुड़िया
कक्षा -नौवीं

जिंदा रखे दिल में उम्मीदों को तो गरल के समुंदर से भी गंगाजल निकलेगा।

ट्रेन का इंतजार

घर से निकला था मैं आठ बजे
पता चला ट्रेन था लेट।
वहीं स्टेशन पर थोड़ी देर
करना पड़ा मुझे वेट।

घोषणा हुई भी 'यात्रियों',
रेल आएगी दस बजे ।
लगा मैं सोचने कि
कैसे किया जाए कुछ मजे।

सारा प्लेटफार्म घूम लिया,
पूरा स्टेशन झूम लिया ,
जो कुछ लाया था खाने को,
उसे भी पेट भर कर खा लिया।

अब मैं लगा मोबाइल देखने,
ढेर फिल्म देखें ,ढेर गाने सुने ,
फिर भी ट्रेन ना आते देख
रिश्तेदारों को लगा फोन करने।

मेरे साथ आज ही मजाक होना था?
क्या आज ही रेल को लेट होना था?
क्यों जिंदगी मुझे इतनी सताए?
क्या अभी फोन का चार्ज जाना था?

लो ! डिले होते -होते
अब ट्रेन आएगी रात को
कभी नहीं किया इतना इंतजार ,
इसलिए सहन ना कर पाया इस बात को ।

तीन घंटा परीक्षा पेपर लिखने बैठ जाता
तब भी बहुत समय शेष रह जाता,
पेपर तो लिखकर खत्म हो जाता ,
पर फिर भी ट्रेन ना आता।

लाचार और विवश मैं अब
करने लगा दूसरे यात्रियों से बातें।
स्टेशन पर केवल एक ही सवाल
अब इतना समय कैसे काटे?

बन गए गहरे रिश्ते अनजान लोगों से ,
सब से बातें करने का मजा ही कुछ और है ।
कर रहा मैं 'सोशलाइजिंग' सच्चा वाला,
भले ही यह सोशल मीडिया का दौर है।

मोबाइल की दुनिया में हम इतना खो गए ,
अपने आस-पास के लोगों से रिश्ते रखना भूल गए ।
असली लोगों को भूल कर अब हम
फोन पर दोस्त बनाने जुट गए ।
उस दिन यह एहसास हुआ कि
कलयुग में हम कितना डूब गए।

भिन्न लोगों से मिला मैं अब उस दिन,
'एक्सपीरियंस' का पहाड़ मिल गया
बातें करते, फोटो खींचते ना जाने समय
अपने आप कैसे बीत गया।

बारह घंटे बाद आखिर प्रकट हुई ट्रेन ,
आखिरकार हुई इंतजार की घड़ी समाप्त।
प्लेटफार्म की स्मृतियों को लेकर चला मैं था,
दिन मेरा दुर्लभ आज पर्यंत।

बर्णिल मजिन्दार बरुआ
कक्षा -ग्यारहवीं

वक्त आपका है ,सपने भी आपके है और पूरे भी आपको ही करना है।

माँ की महिमा

शब्द नहीं कुछ कहने को,
फिर भी कलम उठाई हूँ,
मुझमें यह सामर्थ कहाँ,
कि तेरा कुछ बखान करूँ।

शक्ति अनोखी तूने पाई,
महिमा तेरी वर्णी ना जाई,
संभाला है व्यापार तुम्हीं ने,
संभाला है संसार तुम्हीं ने।

साफ -सफाई में आगे रहती
व्यापार मन लगा के करती
नेक राह पर हरदम चलती
भविष्य की भी सोच तू रखती।

काँटो से भरा जीवन
हर विपदा से लड़ जाती थी
काँटों को तुरंत हटा देती
मुँह से पर कभी आह न आई।

हम भी तेरे बच्चे है माँ
तेरी ही अंश हम में है
नेक राह पर चलकर हरदम
जीवन में आगे बढ़ना है।

सिद्धि बाहेती
कक्षा-सातवीं

मेरी पहचान–माँ

माँ सुबह की पहली किरण से जगती है।
सारा दिन हमारे पीछे रहती है।
अपना ख्याल भी नहीं रखती,
हम लोगों के लिए जीती है।

कभी अपने बारे में सोचती भी नहीं ,
हमें देख कर खुश हो जाती है ।
हमें अपने माँ के लिए ऐसा कुछ करना चाहिए
कि माँ हम पर गर्व करें ।
माँ का सम्मान हमारा सम्मान है।

चमन अग्रवाला
कक्षा-चौथी

पिता-संघर्ष का नाम

पापा का प्यार है सबसे प्यारा,
पापा का प्यार है सबसे निराला।

पापा ने मेरी छोटी-सी भूल को भी माफ किया है ,
पापा ने मेरी हर इच्छा को साकार किया है ।

पापा ने मुश्किलों से जितना सिखाया है ,
पापा ने पैरों पर खड़ा होना सिखाया है।

पापा ने हक के लिए लड़ना सिखाया है ,
पापा ने बिना डरे मुश्किलों का सामना करना सिखाया है।

पापा ने जिंदगी जीना सिखाया है,
पापा ने ही जिंदगी जीना सिखाया है।

सानवी
कक्षा -छठवीं

मेरी माँ मेरी दोस्त

मेरी माँ बहुत प्यारी है,
पर मिलता ज्यादा डाँट है ।
पर बहुत प्यारी है मेरी माँ।
बचपन से आज तक प्रेम और प्यार देकर ,
जीवन खुशियों से भर देती है ।
अपनी ममता के बल से, शक्ति से
नए खिलौने प्यार से दिलाती है।
जन्मदिन पर बढ़िया खाना खिलाती है,
बचपन से आज तक मुझे सही रास्ता दिखाती है।

सब बोलते हैं कि सच्चा दोस्त कौन है ?
मैं बोलता हूँ कि मेरी माँ मेरी दोस्त है।

भार्गव प्रतिम सइकिया
कक्षा-पाँचवीं

माँ की ममता

मेरी माँ बहुत प्यारी है,
बचपन से मुझे खिलाती है।
मेरी माँ बहुत अच्छी हैं,
बचपन से मुझे सुलाती है।
जीवन में सब कुछ देती है,
वह तो सिर्फ मेरी माँ है।

खिलाती है, पिलाती है, सुलाती है,
हर काम में सहायता करती है।
गलती करने पर डाँटती है,
पर प्यार भी सदा करती है।

अनुभव फूकन
कक्षा पाँचवीं

वक्त आपका है ,सपने भी आपके है और पूरे भी आपको ही करना है।

पिता

माता पर है कई कविताएँ
पिता पर है बहुत कम,
माँ के सामने पिता के मूल्य को
क्यों भूल जाते हैं हम।

हमारी खुशी के लिए वे
अपनी खुशियाँ गँवाते हैं ,
हमारी जरूरत पूरी करने में ही
वह अपना पूरा जीवन बिताते हैं।

अधिक काम करें एवं
परिवार की जरूरत के लिए कमाएं,
ताकि वह हमारी सारी इच्छाएँ
पूरी कर पाए।

वह व्यस्त रहते हैं इस कारण
बीता नहीं पाता उनके साथ ज्यादा वक्त ,
मेहनत और प्रेम है उनके गुण
भले ही बाहर से दिखते हैं थोड़े सख्त।

सारी इच्छा पूरी करें
चाहे अधिक मेहनत कर,
इसीलिए कहते हैं पिता से बढ़कर
नहीं कोई ईश्वर ।

मैं करता हूँ अपने पिता को प्रणाम
क्योंकि वो है मेरे स्वाभिमान।

रूपम अग्रवाला
कक्षा-आठवीं

कुछ ना मिला तो कुछ सीख जाओगे

कहानी

पछतावा

मनमयूख चेटिया
कक्षा-सातवीं

रसमय एक दस साल का बच्चा अपनी माँ के साथ रहता था। उसके पिताजी को किसी काम के कारण विदेश जाना पड़ा। वो और उसकी माँ बहुत सुखी जीवन जी रहे थे। रसमय पढ़ाई -लिखाई ,खेल-कूद और अन्य कामों में भी बहुत अच्छा था। परंतु उसकी एक बुरी आदत थी । वो चीजों को बिखेड़कर रखता था जिसके कारण उसे भी चोट लगती और दूसरों को भी। वो अपनी माँ से रोज कहता कि वो इस आदत को छोड़ देगा। मगर वह इस आदत को छोड़ नहीं पाया। एक दिन रसमय के परिवार में एक नन्हा-सा मुन्ना आया । रसमय बड़ा खुश हुआ। वह अपने छोटे भाई का बहुत ध्यान रखने लगा। प्यार में उसे अपने भाई का नाम ब्रज रखा। ब्रज कुछ बोल ना पाने पर भी अपने बड़े भाई को ध्यान से देखता रहता। उसने धीरे-धीरे चलना सीखा। एक दिन चलते वक्त उसके पैर में जमीन पर पड़ा हुआ एक सुई घुस गई। । वह चींख पड़ा और जोर से रोने लगा। उसके पैरों से खून भी निकलने लगा । रसमय को यह देख बहुत दुख हुआ और साथ में डर भी लगा । दवाइयाँ देने पर धीरे-धीरे ब्रज का घांव ठीक होने लगा । मगर रसमय के कानों में छोटे भाई की रोने की आवाज गूँजती रही। उसने उस दिन से कभी भी चीजें नहीं बिखेरा , हर चीज जगह-जगह पर रखने लगा। उसे देख उसका भाई भी उसकी तरह चीजें जगह पर रखना सीख गया।

जैसा करोगे वैसा भरोगे

आशका अग्रवाल
कक्षा छठवीं

एक नगर में एक राजा रहता था। वह बहुत कंजूस था । वहाँ धन की कोई कमी नहीं थी ,पर तब भी वह गरीबों को खाना नहीं देता था। वह राजा अपनी प्रजा के साथ बुरा व्यवहार करता था । एक दिन जब राजा ने अपने सेवक को पौधे में जल देने को कहा तब उस सेवक से एक गमला गिर गया। उसी वक्त राजा आवाज सुनकर वहाँ पहुँच गए। सेवक को मानो ऐसा लगा कि राजा तो उसकी जान ही ले लेंगे । राजा ने उसे धक्के मार कर काम से निकाल दिया। सेवक की आँखों में आँसू आने लगे । सेवक कुछ नहीं बोला और महल छोड़कर चला गया । उसी दिन राजा सीढ़ियों से अपने कक्ष तक जा रहे थे, तब वह सीढ़ियों से गिर पड़े । उनके माथे पर गहरा चोर आ गया । इसलिए कहते हैं जैसा करोगे वैसा ही भरोगे।

लेख

हे मानव पाप हरो शब्द रूपी शीतल जल बनके

पर्यावरण-वनोन्मूलन का प्रभाव

स्वप्निल गौरव चलिहा
कक्षा-सातवीं

"वनों की जब रखवाली होगी
तो पृथ्वी पर हरियाली होगी"

जंगल हमारे धरती का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। यह हमारे जिंदगी से भी जुड़ा हुआ है ।बहुत लोग सोचते हैं कि पेड़ों के कम होने से कोई समस्या नहीं होगी और इंसान दिन-ब-दिन जंगलों के विनाश करके नयी जगह बनाते जाएँगे । लेकिन हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि पेड़ों के बिना इस धरती का क्या हाल होगा। जंगलों का कम होना ,वनों की कटाई पर्यावरण को कई तरह से प्रभावित करती है ।वनोल्मूलन का अर्थ है वनों के क्षेत्रों में पेड़ों को जलाना या काटना। इस वनोल्मूलन के कारण ही आजकल जलवायु परिवर्तन, मिट्टी का कटाव, वन्यजीवों का गायब होना आदि समस्याएँ बढ़ती दिखाई दे रही है। मौसम और जलवायु परिवर्तन अभी पूरी दुनिया का एक गंभीर समस्या है। वन की कटाई से सिर्फ हरियाली में कमी नहीं आती बल्कि ऐसे बहुत सारे दुष्प्रभाव होती है जो हमारे पर्यावरण को हानि पहुँचाते हैं ।वनोल्मूलन का कारण प्राकृतिक हो सकता है लेकिन प्रमुख कारण है मानवीय गतिविधियाँ। इनमें से कुछ कारण है शहरीकरण यानी कि शहरों का बढ़ना, जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिकरण, इंधन और अन्य प्रयोगों में लकड़ी का व्यवहार आदि। इन कारणों का विश्लेषण अब आवश्यक हो गया है क्योंकि वनोन्मूलन के दुष्प्रभाव से हमें ही पर्यावरण को सुरक्षित रखना है। हम सभी पर्यावरण प्रबंधन के बारे में चर्चा करते हैं। वनोल्मूलन रोकने के लिए भी हम ऐसे ही प्रबंधों का व्यवहार कर सकते हैं।

एक विद्यार्थी होकर भी हम इस कार्य में सहयोग कर सकते हैं- पहला कार्य हम कर सकते हैं वृक्षारोपण यानी ज्यादा से ज्यादा वृक्षों को लगाना। स्कूल एवं आसपास के खाली जगह में हम नए पेड़ लगा सकते हैं । लोगों में जागरूकता लाने के लिए हम कई तरीके अपना सकते हैं जितना हो सके कम कागज या पुनर्चक्रण करने वाला कागज ही इस्तेमाल करना चाहिए। वैकल्पिक ईंधन के बारे में हम लोगों को सूचना सूचना दे सकते हैं। इस प्रबंध के माध्यम से हम यह बात फैलाना चाहते हैं कि विकास और आधुनिकता के इस दौर में हमें प्रकृति और पर्यावरण का ध्यान रखना चाहिए। वनोल्मूलन जैसे पर्यावरण को हानि पहुँचाने वाले कार्यों का विरोध करना चाहिए। वनोल्मूलन को रोकने का हमारा एक छोटा-सा कदम भी कल एक बड़ा परिवर्तन ला सकता हैं।